

DATE - / /

class - B.A. Part - II  
Sub - Hindi (Hon) Paper - II  
by Ravishan Kumar

① समकालीन कविता का परिचय दें?  
अर्थात् समकालीन कविता से तात्पर्य  
आज की कविता से है, नयी कविता  
आंदोलन के बाद कई छोटे-बड़े  
काव्यांदोलन चलाए गए और नये-  
नये नामों से कविता को पुकारा गया,  
जैसे ययुत्सावादी कविता, अकविता आदि  
किंतु कोई भी आंदोलन कविता का  
स्वतंत्र स्वरूप कहाने में कामयाब  
नहीं हुआ और दीर्घजीवी भी नहीं  
रहा। आज हिन्दी में हर सारी कवि-  
तारें लिखी जा रही हैं, किंतु आज  
का कवि कोई वाद से बंचा हुआ  
नहीं है।

समकालीन कविता के लिए कोई  
विषय अद्वितीय नहीं है। मामूली से  
मामूली विषय पर भी प्रभावशाली  
कवितारें लिखी जा रही हैं। डॉ.  
राकेश गुप्त के शब्दों में "असकी दृष्टि  
सब जगह जाती है", वस्तुतः आज  
की कविता की सबसे महत्वपूर्ण  
विशेषताएं हैं: विषय-वैविध्य तथा  
मामूलीपन के भीतर की असाधारणता  
भाषा के स्तर पर आज की कविता  
में बातचीत की सहजता या वार्तालाप



के लय का हीना महत्वपूर्ण है।  
केदारनाथ अग्रवाल की निम्न पंक्तियों  
द्रष्टव्य हैं -

नदी स्क नौजवान  
हीठ लड़की है जो  
पहाड़ से उतर कर  
मैदान में आई है, व

आज के कवि की परिवर्द्धता  
मावों की अभिव्यक्ति के प्रति है।  
समकालीन कविता में हँदों की  
वापसी भी हुई है। नयी कविता  
के दौर में नवगीत आंदोलन चल  
था और तब अनेक कवियों ने  
अपनी कविताओं में हँदों का प्रयोग  
किया था।

प्रयोगवादी कवियों में रघुवीर  
सहाय, फ़ैवर नारायण आदि को  
समकालीन कविता में भी सम्मान  
की दृष्टि से देखा गया। समकालीन  
कवियों की सूची लंबी है किंतु  
धूमिल, अशोक बाजपेयी, ज्ञानेन्द्र  
पति, अरुण कुमार आदि के नाम  
विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।  
आज के कवियों में व्यंग्य स्वर  
की भी प्रधानता मिलती है।

वरतुल: समकालीन हिन्दी कविता  
संवैदना और शिल्प के स्तर पर  
अधिक लोकतांत्रिक हुई है।